IJAER/ November-December 2021 /Volume-10/Issue-3 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

महर्षि पतंजलि का शिक्षा दर्शन आज के परिवेश में

Kshama Rastogi

ASSISTANT PROFESSOR

COLLEGE OF EDUCATION, IIMT UNIVERSITY GANGANAGAR MEERUT

सार–

शिक्षा और दर्शन में परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध है। महान शिक्षा–शास्त्री, दार्शनिक रहे है और महान दार्शनिक, प्रसिद्ध शिक्षा–शास्त्री ही रहे है। जैसा कि जे0 एस0रॉस ने कहा है कि दर्शन और शिक्षा एक ही सिक्के के दो पक्ष है। इसमें दर्शन, विचारात्मक पक्ष है तो शिक्षा क्रियात्मक पहलू है। इस प्रकार स्पष्ट होता है कि प्रत्येक दार्शनिक का शिक्षा से गहरा सम्बन्ध होता है। दार्शनिक चिन्तक तर्कसंगत होते हुए भी मानवीय होता है। विचारको की श्रेणी में महर्षि पतंजलि के शिक्षा–शास्त्री के रूप में विचार अमूल्य है। महर्षि पतंजलि का योग–दर्शन प्राचीन वैदिक शिक्षा–दर्शन पर आधारित है।

महर्षि पतंजलि ने शिक्षा के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए शिक्षा और दर्शन में योग का अत्यधिक महत्व बतलाया है। शिक्षा इस प्रकार की होनी चाहिए जो बालक व व्यक्ति की आध्यात्मिक उन्नति और मानसिक स्वास्थ्य में सहायता प्रदान करे और बालक व व्यक्ति को एक जिम्मेदार नागरिक बनाए इस प्रकार महर्षि पतंजलि के व्यक्तिव, कृतित्व उनके योग दर्शन व शैक्षिक विचारों के अध्ययन से राष्ट्रवासियों तथा विधार्थियों को इस दिशा मे कार्य करने की प्रेरणा प्राप्त होगी।

2 प्रस्तावना

शिक्षा शब्द का उदगम संस्कृत की शिक्षा धातु से हुआ है। जिसका अर्थ है सीख या सीखना। शिक्षा को अंग्रेजी भाषा में एजुकेशन कहते है जो एक लैटिन भाषा के ऐडुकेटम शब्द से उत्पन्न हुआ है। जिसका अर्थ है शिक्षित करना। ए का अर्थ है अन्दर से डूको का अर्थ है आगे बढाना अतएव अथवा शिक्षा का अर्थ है आन्तरिक शक्तियों का बाहर की ओर विकास करना ज्ञान को भीतर ठूँसना नही, अतः स्पष्ट है कि शिक्षा कोई ऐसी वस्तु नही है जो बाहर से दी जा सके। शिक्षा तो एक प्रक्रिया है। एडीसन महोदय ने शिक्षा को एक क्रिया माना है जिसके द्वारा मनुष्य को अपने में निहित उन शक्तियों तथा गुणों का दिग्दर्शन करना होता है जिनका शिक्षा के बिना प्रकट होना असम्भव है।

दर्शन मनुष्य के चिन्तन की उच्चतम सीमा है। इसमें सम्पूर्ण ब्रहमान्ड एवं मानव जीवन के वास्तविक स्वरूप, सृष्टा, आत्मा–परमात्मा, जीव–जगत, ज्ञान प्राप्त करने के साधन और मनुष्य के करणीय तथा अकरणीय कर्मो का तार्किक अध्ययन किया जाता है। दर्शन आंग्ल भाषा के फिलॉसफी शब्द का रूपान्तर है जिसकी उत्पत्ति ग्रीक भाषा के दो शब्दों फिलोस तथा सोफिया से हुई है फिलोस का अर्थ है प्रेम तथा अनुराग और सोफिया का अर्थ है–ज्ञान । इस प्रकार फिलासकी या दर्शन का शाब्दिक अर्थ ज्ञान अनुराग अथवा ज्ञान का प्रेम है। संस्कृत में दर्शन शब्द दृश धातु से बना है जिसका अर्थ है देखना। दृश्यते अनेन इति दर्शनम अर्थात जिससे देखा जाये अर्थात सत्य के दर्शन किये जाये, वह दर्शन है। प्लेटों के अनुसार पदार्थो के सनातन स्वरूप का ज्ञान प्राप्त करना ही दर्शन है। डॉ राधाकृष्णन के अनुसार दर्शन यथार्थता के स्वरूप का तार्किक ज्ञान है।

समस्या कथन–

प्रस्तुत लघु शोध ''महर्षि पंतजलि के शिक्षा दर्शन की वर्तमान समय में प्रासंगिकता'' है।

1.5 प्रस्तुत शब्दावली का परिभाषीकरण –

प्रस्तुत अध्ययन में आये कुछ विचारार्थ शब्दों की परिभाषा देना अति आवश्यक है, लेकिन पहले शब्द क्या है यह जान लेना भी आवश्यक है–

शब्द– शब्द का मूल अर्थ ध्वनि व्यवहार या लोक में पद के अर्थ की प्रतीती हो।

विचारधारा – मन में आने वाले भावों, कल्पना तथा विषय वस्तु या समस्या के बारे में बनने वाली सूझबूझ, राय या दृष्टिकोण को विचारधारा कहते है।

पतंजलि– योग दर्शन, मिहाभाष्य तथा चरक संहिता के रचनाकार।

1. दर्शन– दर्शन का अर्थ उस अमूर्त्त चिन्तन से है जिसके द्वारा आत्मा, परमात्मा, प्रकृति आदि का रहस्य मालूम किया जाता है।
2. योग सूत्र– महर्षि पतंजलि कृत योग दर्शन जो हमारे छः दर्शनों में से एक है।
3. शताब्दी– इसका अर्थ है सौ वर्ष का पूरा समय।

4. मुनित्रय– मुनित्रय का अर्थ है तीन मुनियों की परम्परा जिसमे भगवान कपिल, पाणिनी तथा पतंजलि का स्थान है।
5. आत्मा– जीव के शरीर में उपस्थित परमात्मा का एक अंश।
6. परब्रहा –परब्रहा का अर्थ है एक ऐसी शक्ति से है जो सर्वशक्तिमान है।
7. धर्म– धर्म का अर्थ है व्यक्ति के अधिकारी कर्तव्य
8. ध्यान–ध्यान का अर्थ एक ऐसी प्रवृति से है जो मन को केन्द्रित करती है।
9. मोक्ष–मोक्ष का अर्थ सांसरिक दुखों से मुक्ति पाकर परम तत्व में विलीन होना।
10. अष्टाध्यायी– पाणिनी कृत व्याकरण का प्रसिद्ध ग्रन्थ जिसका आज तक भाषा में प्रयोग होता है।
11. सहजावस्था– एक ऐसी मन की अवस्था जिसके द्वारा क्रिया और ज्ञान शून्य हो जाता है।

अध्ययन के उददेश्य–

उददेश्यों के निर्धारण से ही जीवन को गति व प्रगति मिलती है। इसी प्रकार लघु शोध प्रबन्ध की रचना में प्रवृत्त होने से पूर्व शोधार्थिनी को कुछ उददेश्यों का निर्धारण करना होता है। इन उददेश्यों के आलोक में शोधार्थिनी सुनिश्चित मार्ग का अनुसरण करती है। लघु शोध प्रबन्ध उददेश्यों को निम्न प्रकार अंकित कर सकते है।

1. महर्षि पतंजलि की तत्व मीमांसा के आधार पर प्राथमिकता तथा माध्यमिक स्तरीय शिक्षा के उददेश्यों एवं शिक्षा के अर्थ व सम्प्रत्यय का निर्धारण।
2. महर्षि पतंजलि की ज्ञान मीमांसा के आधार पर प्राथमिकता तथा माध्यमिक स्तरीय शिक्षण विधियों एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का निर्धारण करना।
3. महर्षि पतंजलि की मूल्य मीमांसा के आधार पर, प्राथमिकता तथा माध्यमिक स्तरीय शिक्षा में अनुशासन, शिक्षक –शिक्षार्थी सम्बन्ध एवं विधालय की अवधारणा स्पष्ट करना।
4. महर्षि पतंजलि के योग दर्शन की मुख्य विशेषताओं का विश्लेषण करना।

शोध विधि–

वर्तमान शिक्षा पद्धति को प्रकाशित करने के लिये प्रस्तुत लघु शोध ने ऐतिहासिक अनुसन्धान विधि को अपनाया है।

तथ्यो का संकलन–

इसके निम्न साधन है–

1. प्राथमिक साधन– इसके लिये महर्षि पतंजलि कृत साहित्य का अध्ययन किया गया।
2. द्वितीयक साधन–

(अ) महर्षि पतंजलि से सम्बन्धित ग्रन्थ।

(ब) रामदेव तथा अन्य विचारको के द्वारा प्रकाशित पत्र–पित्रकाओं में प्रकाशित लेख।

तथ्यो का विश्लेषण तथा व्याख्या –

महर्षि पतंजलि के शैक्षिक विचारों का भारत की वर्तमान परिस्थितियों की दृष्टि से गहनता से अध्ययन करके उनकी व्याख्या की गयी है।

महर्षि पतंजलि का जीवन दर्शन–

महर्षि पतंजलि योग दर्शन के निर्माता है। उन्होने जीवन में आध्यात्मिक साधना योग एवं ब्रहाचर्य को अधिक महत्व दिया। वे लोगो के महत्व को स्वीकार करते है तथा योग के द्वारा व्यक्ति के जीवन का लक्ष्य, दिव्य शक्ति का बोध प्राप्त करना बताते है। उनका विश्वास यह है कि व्यक्ति पूर्ण अखण्ड चेतना को प्राप्त करे। उनको जीवन का लक्ष्य मुख्यतः योग के द्वारा परमत्व को प्राप्त करना है।

महर्षि पतंजलि एक महान चिकित्सक भी थे और इन्हे ही चरक संहिता का प्रणेता माना जाता है। वह रसायन विधा के विशिष्ट आचार्य भी थे–अभ्रक विदांस अनेक धातुयोग और लौहशास्त्र इनकी देन है। अतः वह योग के साथ–साथ आयुर्वेद पर भी बहुत जोर देते थे। इसलिये राजा भोजन ने इन्हे तन के साथ मन का भी चिकित्सक कहा है।

महर्षि पतंजलि के जीवन दर्शन का आधार मुख्यतः योग दर्शन ही है और उन्होने अष्टांग योग के आठो अगों कर्म, अंग–यम, नियम, आसान, प्रणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि को अपने जीवन में स्थान दिया है। उन्होने इन आठों अंगों को सम्पूर्ण मानवता के लिए श्रेष्ठ माना है।

महर्षि पतंजलि का शिक्षा दर्शन

महर्षि पतंजलि दार्शनिक होने के साथ–साथ एक महान व्याकरणचार्य तथा चिकित्सक भी थे। उनके शैक्षिक विचार हमे उनके तीन प्रमुख ग्रन्थों दर्शन, महाभाष्य व चरक संहिता से प्राप्त होते है। वे एक आदर्शवादी

विचारक के साथ–साथ यथार्थवादी विचारक भी थे। उन्होने मनुष्य के अन्तःकरण के चार पटल माने है –(1) चित्त (2) मानस (3) बुद्धि (4) ज्ञान ।

महर्षि पतंजलि के शिक्षा दर्शन के मूल आधार योग, आध्यात्मिक साधना और ब्रहाचर्य है। उनका विश्वास था कि जिस शिक्षा में ये तीनो तत्व विधमान हो, उससे मानव का पूर्ण विकास किया जा सकता है। उनके अनुसार सच्ची शिक्षा वह है जो मानव की अन्तर्निहित समस्त शक्तियों –बौद्धिक,शारीरिक,क्रियात्मक, नैतिक व अध्यात्मिक शक्तियों का पूर्ण विकास करे।

महर्षि पतंजलि के अनुसार शिक्षा के उददेश्य–

शिक्षा के उददेश्य–

शिक्षा एक पूर्णतः सोददेश्य प्रक्रिया है। इसलिए शिक्षा का प्रत्येक पक्ष अर्थात अधिगम, अध्यापन, मूल्यांकन, निर्देशन आधारित होते है। शैक्षिक उददेश्य उन व्यवहारिक परिवर्तनों से सम्बन्धित होते है जो कि छात्रों में निश्चित सुनियोजित रूप से पूर्व –नियोजित शिक्षण क्रियाओं के माध्यम से लाये जाते है। इनका स्वरूप विस्तृत व व्यापक होता है और इनकी पृष्ठभूमि दार्शनिक होती है। यह स्पष्ट रूप से शिक्षण प्रक्रिया को दिशा प्रदान करते है। इस प्रकार सम्पूर्ण शिक्षण प्रक्रिया से भी यह प्रत्यक्ष सम्बन्धित होते है। भारतीय दर्शन में शिक्षा का अर्थ जीवन का दिव्य रूपान्तर और सांसरिक दुखों से मुक्ति पाना है। चार्वाक दर्शन के अतिरिक्त सभी भारतीय दर्शन, मोक्ष को ही जीवन का लक्ष्य मानते है। योग दर्शन भी इसका अपवाद नही है। प्रो0 मैक्यूलर के शब्दो में ''भारत में दर्शन ज्ञान के लिए नही बल्कि उस सर्वोच्च लक्ष्य के लिए था जिसके लिए मनुष्य इस जीवन में चेष्टा कर सकता है।

महर्षि पतंजलि के अनुसार पाठयक्रम –

योग दर्शन के प्रतिपादक महर्षि पतंजलि ने अपने दर्शन के पाठयक्रम मे निम्नलिखित बिन्दुओं को महत्व दिया है।

1. आयुर्वेद आधारित– भौतिक शरीर की रचना हेतु।
2. व्याकरण आधारित – भाषिक सुरक्षा हेतु।
3. योग आधारित– आत्मिक सुरक्षा हेतु।

शिक्षण विधियाँ–

शिक्षण एक गतिशील प्रक्रिया व सुनियोजित प्रक्रिया है, जिसका लक्ष्य छात्र को अधिक से अधिक अधिगम अनुभवों को प्राप्त करना है। वैसे तो शिक्षण प्रक्रिया के तीन प्रमुख ध्रुव होते है –शिक्षक, शिक्षार्थी व पाठयक्रम।

शिक्षक–शिक्षार्थी सम्बन्ध–

महर्षि पतंजलि ने शिक्षा प्रक्रिया में शिक्षक का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण माना। उनके विचारानुकूल शिक्षा का अर्थ है, गुरू गृहवास। महर्षि पतंजलि ने छात्रों को भी शिक्षण प्रक्रिया का आधार बतलाया। उनके अनुसार बालकों को उनकी प्रकृति के अनुसार शिक्षा प्रदान करनी चाहिये और छात्रों पर शिक्षा के समय अनुशासन होना चाहिये। महर्षि पतंजलि ने योग दर्शन में छात्रों के लिये अनुशासन को सर्वोपरि बताया। छात्रों के अन्तःकरण में जन्म से ही अनुशासन का अभ्यास कराना चाहिये जिससे उनका शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मि, नैतिक तथा सामाजिक विकास हो सके।

अनुशासन–

महर्षि पतंजलि के अनुसार अध्ययन हेतु संयमित मन और एकाग्रता का होना अनिवार्य है। यह एकाग्रता और संयम अनुशासन के बिना सम्भव नही है। इस कारण महर्षि पतंजलि शिक्षण प्रक्रिया में अनुशासन के महत्व को स्वीकार करते है। योग दर्शन में इन तीनो पक्षों के अनुशासन की योजना प्रस्तुत की गयी है। इसे अष्टांग योग कहा जाता है।

1. यम–

कायिम, वाचिक तथा मानसिक संयम को यम कहा जाता है। यम पाँच है।–

(अ) अहिंसा– अर्थात कभी भी किसी प्राणी को कष्ट न पहुँचाना।

(ब) सत्य – अर्थात मन और वचन से यथार्थ होना, जैसा देखा सुना, अनुमान किया गया हो उसी प्रकार मन वचन रखना।

(स) अस्तेय– अर्थात दूसरे के धन की चोरी अथवा अपहरण न करना और न उसकी इच्छारखना।

(द) ब्रहचर्य– इन्द्रियो में लोलुपता न रखना।

(ड) अपरिग्रह– लोभवश अनावश्यक वस्तु ग्रहण न करना।

चित्त को एकाग्र करने हेतु इन सब नियमों का पालन आवश्यक है।

2. नियम–

योग दर्शन का दूसरा नियम सदाचार पालन है। ये नियम पाँच है।

(अ) शौच – अर्थात स्नान और पवित्र भोजन आदि के द्वारा बाहा अथवा शारीरिक शुद्धितथा मैत्री करूणा, दयालुता और उपेक्षा के द्वारा आभ्यन्तिरिक अथवा मानसिक शुद्धि।

(ब) सन्तोष – अर्थात उचित प्रयास से जितना भी प्राप्त हो सके उससे ही सन्तुष्ट रहना।

(स) तप – अर्थात सर्दी–गर्मी आदि में रहने का अभ्यास तथा कठिन व्रत का पालन करना।

(द) स्वाध्याय– अर्थात नियम पूर्वक धर्म–ग्रन्थों का अध्ययन करना।

(य) ईश्वर प्रणिमधान– अर्थात ईश्वर का ध्यान व अपने को उसके ऊपर छोड देना।

3. आसन–

उठने, बैठने, चलने, सोने, पढने, लिखने आदि के उचित आसानों का अभ्यास इसके अन्तर्गत आता है। इन आसनों का प्रयोग छात्र को शारीरिक रूग्णता से मुक्ति दिलाता है। स्नायु मण्डल का वातावरण जिससे मानसिक विकारों का निरोध हो सके। इसी के माध्यम से होना सम्भव है।

4. प्रणायाम–

स्थिर आसन होने से आश्वांस व प्रश्वासं की गति के विक्षेप को प्रणायाम कहा जाता है। इससे स्वास्थ्य नियन्त्रित होता है। इसके तीन अंग है–

(अ) पूरक– अर्थात श्वास अन्दर खीचना।

(ब) कुम्भक– अर्थात श्वास को भीतर रोकना।

(स) रोचक– अर्थात नियमित रूप से श्वास छोडना।

इससे शरीर व मन में दृढता आती है और चित्त को एकाग्र किया जा सकता है।

5. प्रत्याहार–

इन्द्रियों को अपने –अपने विषय से हटाकर अन्तर्मुखी करने को प्रत्याहार कहा जाता है। इससे सांसारिक विषयों में रहते हुये भी मन प्रभावहीन रहता है। इसकी प्राप्ति हेतु छात्र को दृढ संकल्प और कठोर इन्द्रिय निग्रह की साधना की आवश्यकता है।

उपरोक्त पाँच साधन बहिरंग कहलाते है और व्यावहारिक शिक्षा में अनुशासन के आवश्यक अंग है। शेष तीन साधन अन्तरंग है और योग से सीधे सम्बन्धित है। अध्यापक, दार्शनिक, योग, वैज्ञानिक तथा साधक के लिये इनकी साधना आवश्यक होती है।

6. धारणा–

चित्त को किसी स्थान पर स्थिर कर देना ही धारणा है । यह विषय बाहा भी हो सकता है और आन्तरिक भी। किसी भी विषय पर दृढता पूर्वक ध्यान को एकाग्र करना धारण है।

7. ध्यान–

किसी स्थान से ध्येय वस्तु का ज्ञान जब तक प्रवाह में संलग्न होता है तब उसे ध्यान कहते है। इससे ध्येय का मनन किया जाता है।

8. समाधि–

इस शब्द की व्युत्यति करने पर यह अर्थ निकलता है– विक्षेपों को हटाकर चित्त एकाग्र होना। ध्यान की ध्येय रूप में भासित हो और अपने स्परूप को छोडकर तब वही समाधि है।

अतः महर्षि पतंजलि ने अनुशासन की भावना को विकसित करने के लिये बालको के लिये यह अष्टांग अंग बताये है। इनके पालन से बालक के अन्दर स्वतः ही अनुशासन की भावना का विकास होता है। महर्षि पतंजलि स्वानुशासन को उत्तम मानते है। महर्षि पतंजलि के अनुसार ऐसे होने चाहिये। जो बालक का शारीरिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक तथा आत्मिक विकास मे सहायक हो।

महर्षि पतंजलि के दृष्टिकोण के अनुसार शिक्षा के विविध पक्ष–

1. धार्मिक शिक्षा–

   महर्षि पतंजलि धार्मिक प्रवृति के पुरूष थे और बालक के आध्यात्मिक विकास के लिये धार्मिक शिक्षा आवश्यक मानते थे। धर्म प्रधान शिक्षा में बालको को अपनी प्राचीन सभ्यता व संस्कृति पर आधारित पौराणिक ग्रन्थो, जैसे वेद, दर्शन, पुराण, उपनिषद, रामायण, महाभारत, भगवतगीता,अष्टाध्यायी, महाभाष्य आदि ग्रन्थों की शिक्षा बालकों को प्रदान करनी चाहिये। इनके द्वारा अपनी आत्मा के विकास के लिये स्वयं प्रयास करे।

2. स्त्री शिक्षा–

   महर्षि पतंजलि के अनुसार प्राचीन काल में पुरूषों के समान स्त्रियों की शिक्षा का प्रावधान था। महर्षि पतंजलि ने बालक व बालिकाओं में भिन्न्ता बतलाई। यदि बालको की शिक्षा का उददेश्य उन्हे श्रेष्ठ, सच्चरित्र और लौकिक जीवन में सफल बनाना है तो बालिकाओं की शिक्षा का लक्ष्य उन्हे उत्तम गृहणी और श्रेष्ठ माता बनाना है।

3. जन शिक्षा–

महर्षि पतंजलि ने योग दर्शन में शिक्षा पर सबका अधिकार समान होना बताया। उनकी योग शिक्षा किसी एक विशेष समुदाय के लिये नही थी बल्कि हर व्यक्ति के लिये थी। प्रत्येक व्यक्ति योग की शिक्षा ग्रहण करने का अधिकारी था। महर्षि पतंजलि की योग शिक्षा '' सर्वजन हिताय'' पर आधारित है।

4. नैतिक शिक्षा–

महर्षि पतंजलि का मत है कि आध्यात्मिक विकास के लिये नैतिक विकासा आवश्यकता है। नैतिक विकास के लिये उन्होने बतलाया कि बालकों में उत्तम शारीरिक, मानसिक एवं भावात्मक आदतों का निर्माण किया जाये और उनके प्राकृतिक संवेगों का उचित दिशा में मार्गान्तीकरण किया जाये।

5. आध्यात्मिक शिक्षा–

महर्षि पतंजलि आदर्शवादी भी थे। इसलिये उन्होने शिक्षा को व्यक्ति के आध्यात्मिक गुणों के के विकास में भी सहायक माना है।

6. योग शिक्षा–

महर्षि पतंजलि ने जन–जन को सुखी व समृद्ध बनाने के लिये योग शिक्षा को आवश्यक बताया है। उनके अनुसार योग के द्वारा बालक के शारीरिक विकास के साथ –साथ आध्यात्मिक विकास भी होता है। अरस्तु की यह कहावत''स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है''। बिल्कुल सत्य है। महर्षि पतंजलि ने भी योग शिक्षा को न सिर्फ बालकों को बल्कि सभी मानव जाति के कल्याण के लिये आवश्यक बताया है। योग के द्वारा सम्पूर्ण मानव जाति सुखी होकर एक समृद्ध जीवन का आनन्द उठा सकती है।

7. वसुदैव कुटुम्बकम की भावना का विकास–

महर्षि पतंजलि ने लोगों को प्रेम, त्याग, सदभाव तथा सहयोग से रहने की सीख दी। उनके अनुसार सभी धर्मों व जातियों के लोगों को आपस में मिल जुलकर रहना चाहिये। धर्मो व जातियों के आधार पर नही बाँटना चाहिये। अपने देश का कल्याण करने के लिये सभी व्यक्तियों को पारस्परिक मैत्रीपूर्ण तथा शान्तिपूर्ण जीवन व्यतीत करना चाहिये।वसूधैव कुटुम्बकम की भावना के लिये हमे बालकों के अन्दर प्रारम्भ से ही मिल–जुलकर रहने, आपसी सहयोग व मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों का विकास करना चाहिये।

वर्तमान युग में महर्षि पतंजलि के शिक्षा दर्शन की उपादेयता–

शिक्षा देश के भविष्य की नीव है और उसे मजबूत करने में पिछले पचास वर्षो में कोताही हुई है शिक्षा में सुधार करने का कार्य इतना बडा था कि उसको राष्ट्रीय चुनौती के रूप में स्वीकार नही किया गया और उसे जितनी प्राथमिकता मिलनी चाहिए थी, उतनी नही मिली। अभी तक हम उस मोह जाल से पूर्णतः नही निकल पाए है जिसमें अराजकता और दिशाहीनता व्याप्त है,वैसी शायद पहले कभी नही थी। युद्ध, हिंसा, अंधकारमय भविष्य में मार्ग निर्देशन के लिए महर्षि पतंजलि का प्रबुद्ध और व्यवहारिक शिक्षा दर्शन आशादीप बन सकता है। इनका शिक्षा दर्शन वर्तमान शिक्षा के दोषों का निवारण करके आदर्श शिक्षा प्रणाली की संरचना में सार्थक योगदान दे सकता है। विचारों और प्रयोगों को समझा जाये और उन पर अमल किया जाये।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. स्वामी करपात्री जी महराज : मार्क्सवाद और रामराज्य, गीता प्रेस, गोरखपुर–1928
2. किलपैट्रिक, डब्ल्यू0 एच0 : ऐजुकेशन फॉर ए चेजिंग वर्ल्ड, मैकमिलन एण्ड कम्पनी एण्ड कम्पनी इण्डिया लिमिटेड, प्रथम संस्करण 1932
3. हाकिंग , विलियम ई0 : दर्शन, दी बिजनेस ऑफ एवरीवन जर्नल ऑफ अमेरिकन एसोशिएशन ऑफ यूनिवर्सिटी वुमैन–1937
4. बेसेन्ट एनी : योग, थियोसोफिकल पब्लिक हाऊस, अडयार, मद्रास–1945
5. लीन ई0 : व्हाज इज ऐजुकेशन , बनैस एण्ड फैब्स वासबोर्न लिमिटेड, द्वितीय संस्करण 1945
6. रॉस जे0 एस0 : ग्राउन्ड वर्क ऑफ एजुकेशनल थ्योरी , जार्ज जी0 हार्प एण्ड कम्पनी 1949